3

प्राथमिक शिक्षा में बाल साहित्य की विधाओं का योगदान

विभा मलिक*

मानव जीवन में साहित्य का विशेष महत्त्व है क्योंकि वह मानव जीवन का एक ऐसा प्रभावी मुखरित रूप है जो हमारी अभिव्यक्ति और दमित भावनाओं को व्यक्त करते हुए हमें एक संस्कृति और जाति के सूत्र में बाँधता है। इसी संदर्भ में बाल साहित्य भी महत्वपूर्ण है। बाल साहित्य में बच्चों की रुचि, उनकी कल्पना, उनकी अनुभूति तथा उनकी मानसिकता आदि केंद्र बिंदु होते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि बाल साहित्य का संबंध बच्चों के मानसिक तथा बौद्धिक विकास से है। बच्चों के बौद्धिक तथा मानसिक विकास की प्रक्रिया बाल-मनोविज्ञान के माध्यम से समझी जा सकती है। अतः बाल साहित्य का संबंध बाल-मनोविज्ञान के साथ दृढ़ता से बनता है। इस विचारधारा के अनुकूल बाल साहित्य का लेखन और प्रकाशन होता रहा है। अध्ययन की दृष्टि से बाल-साहित्य, बाल-कहानी, बाल-उपन्यास, बाल-गीत, बाल-नाटक आदि विधाओं में लिखा जाता रहा है।

बाल कहानी बच्चों के मनोरंजन का सुंदर माध्यम है, यह बात सदियों से सर्वविदित है। बच्चे कहानियों में सर्वाधिक रुचि भी लेते हैं। बाल कहानियाँ बच्चों को आनंद देती हैं साथ ही उनकी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित भी करती हैं। बाल मानसिकता या बाल-केंद्रित कहानियाँ हिंदी साहित्य में आमतौर पर दिखाई देती हैं। कथा साहित्य में देखें तो प्रारंभ में हमें प्रेमचंद की 'ईदगाह' और 'बड़े भाईसाहब' जैसी कहानियों में बाल मन की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। इसके पश्चात् प्रसाद जी की 'छोटा जादूगर' जैनेन्द्र की 'खेल', 'पाज़ेब', 'अपना-अपना भाग्य', अज्ञेय जी की 'सेब और देव', राजेंद्र यादव की 'भय', मृणाल पांडे की 'खेल' आदि कहानियाँ ऐसी हैं, जिसमें बाल जीवन की विभिन्न समस्या, जिज्ञासा, कुंठा आदि का चित्रण किया गया है। बालमन अनगढ़, जिज्ञासाओं से भरा, स्थिति को समझने का प्रयास करने वाला होता है। बालक की इन सभी मन: स्थितियों को इन कहानी के माध्यम से सफ़लतापूर्वक दर्शाया गया है।

दस–बारह वर्ष के बच्चों के लिए बाल उपन्यास विधा को समृद्ध किया गया है। बच्चों के मन में

* *रिसर्च स्कॉलर, एम. फ़िल* (हिंदी साहित्य), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

उपन्यास पढ़ने की जिज्ञासा होती है। उपन्यास में बच्चों का केवल मनोरंजन ही नहीं होता, बल्कि उन्हें एक व्यापक दृष्टि भी मिलती है जो दुनिया के रहस्यों को जानने-समझने में उनकी मदद करती है।

बाल गीत बाल साहित्य का अभिन्न अंग है। संसार में जब लिखने-पढ़ने और प्रकाशित करने के साधनों का अभाव था तो बालगीत ही बच्चों की साहित्यिक भूख को तृप्त करते थे। बचपन में सीखे गए 'चंदा मामा', 'बूढ़ी नानी', आदि से जुड़े हुए गीत आज भी प्रत्येक बच्चे को याद रहते हैं।

इन सभी विधाओं के अतिरिक्त बाल नाटक विधा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह सबसे अधिक सक्षम तथा संप्रेषण की दृष्टि से सबसे अधिक प्रभावशाली विधा है। यह सर्वविदित है कि बच्चे वस्तुओं को देखकर सीखते हैं, इसलिए नाटक प्राथमिक स्तर पर सीखने का सर्वोत्तम माध्यम माना गया है।

नाटक बच्चों की मानसिकता को केंद्र में रखकर लिखे जाते हैं। इनमें बच्चों के खेल, उनका आपसी व्यवहार, उनकी कल्पनाएँ, उनकी समस्याएँ आदि का विचार किया जाता है। नाटक विधा को स्वतंत्र पहचान देने वाले तत्त्व बाल नाटकों में होते हैं। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद और भाषा शैली, देशकाल-वातावरण आदि। बाल नाटकों में इन तत्त्वों की सीमाएँ बाल रुचि और बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से ही बँधी हुई होती हैं, जो बाल नाटकों के पृथक स्वरूप का निर्माण करती हैं।

नाटकों से बच्चों को अपने कल्पनालोक में विचरण करने का, अपने अनुभव संसार से जुड़ने का और मनोरंजन के माध्यम से जीवन विषयक सदुपयोगी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। नाटक में साहित्य के अलावा संगीत, नृत्य, चित्रकला, एवं अभिनय आदि का समावेश होने से नाटक बच्चों को काफ़ी देर तक अपने में तल्लीन रखते हैं। बाल नाटकों में मनोरंजन के साथ ही एक मीठे उपदेश का सजीलापन होता है जो इन्हें एक समग्र रचना बना देता है। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि नाटकों को विद्यालयी शिक्षा से जोड़ दिया जाना चाहिए क्योंकि विद्यालयी शिक्षा को बच्चों के उचित विकास का केंद्र माना जाता है।

अन्य सभी विधाओं में नाटक ही ऐसा एक महत्वपूर्ण विधा रूप है जिसका रंगमंच एक अनिवार्य तत्त्व है। बाल रंगमंच, बुनियादी रंगमंच है। बाल नाटकों की सफ़लता का रहस्य बाल रंगमंच है। बच्चों के संतुलित शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए रंगमंच सर्वाधिक उपयोगी साधन है। बच्चों के मनोरंजन की परंपरा के इतिहास में पहला चरण बाल साहित्य है, तो दूसरा पड़ाव बाल रंगमंच है। वास्तव में बाल रंगमंच बाल साहित्य के अनुप्रयोग का सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र है। शिक्षा पद्धति की दृष्टि से भी बाल रंगमंच का महत्वपूर्ण स्थान है। बाल नाटकों के प्रस्तुतीकरण में दृश्यबंध, प्रकाश योजना, ध्वनि योजना, अभिनय आदि विभिन्न पक्षों के साथ ही बाल दर्शक भी महत्वपूर्ण हैं।

इन नाटकों में बच्चों की रुचि का अधिक खयाल रखा जाता है। कई नाटकों की शुरूआत गीत से, संगीत की धुन से, निवेदक के माध्यम से और उद्घोषक द्वारा ढोलक बजाकर आदि के द्वारा की जाती है। साथ

Chapters- PS-July2016.indd 20 22-08-2017 AM 10:00:59

ही पशु, पक्षी, पेड़, बादल, राक्षस, परी आदि पात्रों के अनुरूप रंग-बिरंगा वेश-विन्यास, रूपसज्जा का उपयोग बच्चों के लिए किया जाता है।

रंगकर्म, विश्व की अधिकांश संस्कृतियों में एक महत्वपूर्ण कला रूप है। इसके विकास तथा प्रचार-प्रसार के लिए भारत के अनेक शहरों में विभिन्न नाट्य संस्थाएँ कार्यरत हैं। शौकिया या व्यावसायिक प्रकार की कुछ रंग संस्थाएँ बच्चों के नाटक भी कर रही हैं, तो कुछ रंग संस्थाएँ बच्चों के लिए ही रंगकर्म कर रही हैं। 'उमंग' (दिल्ली), 'उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी' (लखनऊ, उत्तर प्रदेश), 'समानान्तर बाल रंगमंच' (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश), 'टोली' (भोपाल, मध्य प्रदेश), 'बाल मंच' (उज्जैन, मध्य प्रदेश), 'हल्लागुल्ला' (इंदौर, मध्य प्रदेश), 'सफ़र मैना' (पटना, बिहार), 'नांदिकार' (कोलकाता, पश्चिम बंगाल) आदि प्रमुख शहरों में अनेक रंग-संस्थाएँ बच्चों के लिए कार्यरत हैं। ये संस्थाएँ ग्रीष्मकालीन कार्यशालाओं तथा शिविरों का आयोजन करके बच्चों को अभिनय, नृत्य, संगीत और मुखौटे बनाना आदि कलाएँ सिखाती हैं। इन कार्यशालाओं में तैयार किए गए नाटकों को रंगमंच पर प्रस्तुत करती हैं तथा प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा लेती हैं। 'फुलवारी', 'सफ़र मैना', 'हल्लागुल्ला', ये रंग संस्थाएँ समाज के उपेक्षित वर्ग के बच्चों के लिए तथा दिव्यांग बच्चों के लिए कार्यशालाएँ चलाती हैं। इससे इन बच्चों को केवल प्रोत्साहन ही नहीं मिलता बल्कि उनके मनोरंजन के साथ उन्हें अपने जीवन में उपस्थित कमियों का एहसास नहीं रहता और वे अनुभव जगत को समृद्ध कर अपनी तरल कल्पनाओं को जागृत करने का प्रयास करते हैं।

बाल रंगमंच के कार्य में बाल रंगकर्मियों को और बाल रंगमंच संस्थाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। बच्चों को एकत्रित करना, उनके अभिभावकों को मनाना, नाटक की रिहर्सल के लिए जगह ढूँढना, आर्थिक सहायता लेना, बच्चों को नाटक और रंगमंच की तरफ़ आकर्षित करने जैसी कई चुनौतियाँ संस्थाओं के सम्मुख प्रमुख रूप से आती हैं। इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए बाल रंगकर्मी आगे बढ़ रहे हैं। बाल रंगमंच को अधिक सक्षम बनाने हेतु समाज के सभी घटकों को अपना योगदान देना होगा। बच्चों को बाल रंगमंच की ओर आकर्षित करने के लिए अभिभावकों का योगदान भी अपेक्षित है। बाल रंगकर्मियों का समर्पण भी अत्यावश्यक है। बाल नाटकों की पत्र-पत्रिकाओं का अधिकाधिक प्रकाशन, सरकार की ओर से आर्थिक सहायता और नाट्यकला को विद्यालयी शिक्षा के साथ जोड़ना आदि कई उपायों से बाल रंगमंच की अधिकाधिक उन्नति संभव हो सकती है। डिजिटल रूप से भी बाल नाटकों को विभिन्न काल्पनिक पात्रों तथा कार्टून के रूप विकसित कर इंटरनेट पर अपलोड किया जा सकता है।

देश का भविष्य आज के बच्चों के हाथ में है, क्योंकि इन्हें ही भविष्य में समाज की बागडोर सँभालनी है। बच्चों के लिए शिक्षा की सुविधा, उनके लिए खेल के मैदान, उनके मनोरंजन के माध्यम आदि सब सुविधाएँ उपलब्ध कराने में समाज की सजगता और क्रियाशीलता महत्वपूर्ण होती है। किसी बच्चे के स्कूल में प्रथम आने से, किसी प्रतियोगिता में अव्वल

Chapters- PS-July2016.indd 21 22-08-2017 AM 10:00:59

आने से या किसी कला में श्रेष्ठत्व प्राप्त करने से उसके अभिभावक, पारिवारिक सदस्य ही अपने आप को धन्य नहीं समझते, बल्कि संपूर्ण समाज को उस बच्चे पर गर्व होता है। यह बच्चा हमारे समाज, गाँव का, हमारे देश का है यही सबके लिए बहुत बड़ी बात होती है। इस दृष्टि से सोचने पर स्पष्ट होता है कि समाज के सुरुचि-संपन्न व्यक्ति तथा अभिनय, नाटक, चित्र, शिल्प, आदि कलाओं में निपुण कलाकारों की नींव किसी भी समाज का बाल नाट्यकर्म होता है। इस कार्य को गंभीरता से निभाने में सरकार, अभिभावक, शिक्षक, तथा प्रत्येक नागरिक की ज़िम्मेदार होती है। बाल रंगमंच वयस्क रंगमंच का छोटा संस्करण नहीं है अपितु यह एक अलग और खुला रूप है। बाल रंगमंच बच्चों के लिए मनोरंजन का माध्यम नहीं है, यह एक तरह से बच्चों के लिए संस्कारशाला है। इस रंगमंच से जुड़कर बच्चों के व्यक्तित्व का विकास तो होता ही है, साथ ही वे समाज और संस्कृति से भी जुड़ते हैं। इस प्रकार बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु बाल नाटककारों ने केवल बाल-रंग-संस्थाओं की स्थापना ही नहीं की अपितु बाल रंगमंच के क्षेत्र में सक्रियता भी दिखाई है, जिससे इस पूरे कार्य में बड़ी विविधता आई है। आज हिंदी बाल नाटक और रंगकर्म की स्थिति, गति और दिशा को देखते हुए इस क्षेत्र में जितना कार्य हुआ है, यह एक सराहनीय प्रयास है तथा आगे और अधिक सफ़लता इस क्षेत्र में प्राप्त होगी ऐसी अपेक्षा ज़रूर की जा सकती है।

संदर्भ

अग्रवाल, गिरिराज शरण. 2013. *बच्चों के अनुपम नाटक*. डायमंड पॉकेट बुक्स प्रकाशन, दिल्ली.

फ्रायड, सिगमंड. 2015. *फ्रायड — मनोविश्लेषण*. अनुवादक देवेंद्र कुमार. राजपाल एंड संस, दिल्ली.

मनु, प्रकाश. 2013. *इक्कीसवीं सदी के बालनाटक*. प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली.

वर्मा, प्रीती और डी. एल. श्रीवास्तव, 2014. *बाल मनोविज्ञान — बाल विकास*. श्री विनोद पुस्तक मंदिर, दिल्ली.

Chapters- PS-July2016.indd 22 22-08-2017 AM 10:00:59